चार महोर्रम

मर्होरम की है चौथी दिल पर तारी एक नया ग़म है
ज़मीने कर्बला पर ख़ेमए शाहे दो आलम है

चली आती हैं फौज़ें कत्ल करने शाहे वाला को
तलातुम में ज़मीने कर्बला जुमबिश में पैहम है

इधर बेताबियाँ एहले हरम की बढ़ती जाती हैं
उधर प्यासा लहू के शाह का हर एक अज़लम है

लईन शादाँ हैं वाँ फ़ौजों की कसरत बढ़ती जाती है
यहाँ तन्हा इमामे दी हैं और सकते का आलम है

शक़ीं ख़ेमों के पास आते हैं दौड़ाते हुए घोड़े
डरे जाते हैं बच्चे बीबियों में शोरो मातम है

हुआ है कर्बला में आपका जिस रोज़ से आना
इसी तारीख से फौज़ों का नरग़ा शह पर पैहम है

तलब फरमाईए अब कर्बला में 'फिक्र' को आक़ा
कि इसके दिल का रन्जो ग़म से अब कुछ और आलम है